

आधुनिक हिंदी फिल्मों की भाषा एवं मध्ययुगीन परिवेश : एक अध्ययन

अक्षय रंजन वर्मा¹, डॉ. मेघा आर. पवार²

शोधार्थी, हिंदी विभाग, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)¹

शोध निर्देशक, हिंदी विभाग, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)²

सारांश

आधुनिक हिंदी सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह इतिहास, संस्कृति, भाषा, सामाजिक स्मृति और सामूहिक कल्पना को प्रभावित करने वाला एक सशक्त माध्यम भी है। विशेष रूप से मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित हिंदी फिल्मों में भाषा का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि इसके माध्यम से उस काल की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक विविधता, राजनीतिक परिस्थितियों, धार्मिक मान्यताओं और जीवन-पद्धति को दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है। ऐसी फिल्मों में प्रयुक्त भाषा प्रायः शुद्ध ऐतिहासिक भाषा न होकर आधुनिक हिंदी, उर्दू, संस्कृतनिष्ठ शब्दावली, क्षेत्रीय बोलियों और काव्यात्मक अभिव्यक्तियों का मिश्रित रूप होती है।

मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों में भाषा का उद्देश्य केवल संवाद प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि पात्रों की सामाजिक स्थिति, धार्मिक पहचान, क्षेत्रीय पृष्ठभूमि, सत्ता-संबंध और मानसिकता को अभिव्यक्त करना भी होता है। राजदरबार, युद्ध, प्रेम, भक्ति, लोकजीवन, सामंती व्यवस्था और धार्मिक सह-अस्तित्व जैसे प्रसंगों में भाषा के अलग-अलग रूप दिखाई देते हैं। आधुनिक फिल्मकार ऐतिहासिक वातावरण को विश्वसनीय बनाने के लिए तत्सम, तद्भव, उर्दू-फारसी, राजस्थानी, ब्रज, अवधी और अन्य लोकभाषिक तत्वों का प्रयोग करते हैं।

हालाँकि फिल्मों में मध्ययुगीन भाषा का पुनर्निर्माण प्रायः कल्पनाश्रित और चयनात्मक होता है। कई बार ऐतिहासिक प्रामाणिकता की अपेक्षा नाटकीय प्रभाव, दृश्यात्मक भव्यता और दर्शकीय लोकप्रियता को अधिक महत्व दिया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन आधुनिक हिंदी फिल्मों की भाषा तथा मध्ययुगीन परिवेश के चित्रण के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्द: आधुनिक हिंदी सिनेमा, मध्ययुगीन परिवेश, फिल्मी भाषा, ऐतिहासिक भाषा, उर्दू-फारसी, लोकभाषा, सांस्कृतिक स्मृति, ऐतिहासिक चेतना।

प्रस्तावना

सिनेमा आधुनिक युग का ऐसा जनसंचार माध्यम है, जो दृश्य, श्रव्य और भाषिक तीनों स्तरों पर दर्शकों को प्रभावित करता है। ऐतिहासिक और मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों का महत्व इसलिए अधिक है कि वे अतीत को वर्तमान समाज के सामने पुनः प्रस्तुत करती हैं। इन फिल्मों के माध्यम से दर्शक किसी ऐतिहासिक काल की राजनीतिक व्यवस्था, सामाजिक संबंधों, धार्मिक विश्वासों, युद्ध-परंपराओं, प्रेम-संबंधों और सांस्कृतिक जीवन से परिचित होते हैं।

मध्ययुगीन भारत भाषिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत विविधतापूर्ण था। इस काल में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अवधी, ब्रज, राजस्थानी, पंजाबी, दक्खिनी, फारसी और अरबी जैसी भाषाओं तथा भाषिक रूपों का विभिन्न स्तरों पर प्रयोग होता था। राजकीय प्रशासन में फारसी का प्रभाव था,

जबकि लोकजीवन में क्षेत्रीय बोलियों और लोकभाषाओं का व्यापक प्रयोग होता था। भक्ति और सूफी आंदोलनों ने भी जनभाषाओं को समृद्ध किया।

आधुनिक हिंदी फिल्मों में इस जटिल भाषिक परिवेश को पुनर्सृजित करने का प्रयास किया जाता है। परंतु फिल्मी भाषा ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं होती; वह कथा, पात्र, दृश्य और दर्शक की अपेक्षाओं के अनुसार निर्मित होती है। इसलिए मध्ययुगीन परिवेश की फिल्मी भाषा को इतिहास, कल्पना और आधुनिक संवेदना के समन्वित रूप में समझना आवश्यक है।

आधुनिक हिंदी फिल्मों की भाषा की संकल्पना

आधुनिक हिंदी फिल्मों की भाषा से आशय उन संवादों, गीतों, कथनों, संबोधनों, मुहावरों और भाषिक शैलियों से है, जिनके माध्यम से फिल्म की कथा और पात्रों का निर्माण किया जाता है। यह भाषा साहित्यिक भाषा से भिन्न होती है, क्योंकि इसका उद्देश्य दृश्य और श्रव्य माध्यम के साथ मिलकर कम समय में प्रभावशाली संप्रेषण करना होता है।

मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों में फिल्मी भाषा के तीन प्रमुख उद्देश्य होते हैं—

ऐतिहासिक वातावरण का निर्माण – भाषा के माध्यम से काल-विशेष की अनुभूति उत्पन्न करना।

पात्रों की पहचान स्थापित करना – राजा, सैनिक, संत, कवि, व्यापारी, ग्रामीण, दासी या सूफी जैसे पात्रों की सामाजिक स्थिति और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि स्पष्ट करना।

आधुनिक दर्शक से संवाद स्थापित करना – भाषा इतनी कठिन न हो कि दर्शक कथा से दूर हो जाए।

इस प्रकार ऐसी फिल्मों की भाषा न तो पूर्णतः आधुनिक होती है और न ही पूरी तरह मध्ययुगीन। यह एक पुनर्निर्मित, चयनित और नाटकीय भाषा होती है, जो ऐतिहासिकता का आभास उत्पन्न करती है।

मध्ययुगीन परिवेश की भाषिक विशेषताएँ

हिंदी, ब्रज और अवधी का प्रयोग

मध्ययुगीन भारतीय समाज में ब्रज और अवधी जैसी लोकभाषाओं का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक महत्व अत्यंत व्यापक था। भक्ति काव्य, लोकगीत और धार्मिक आख्यानों में इन भाषाओं का प्रयोग हुआ। आधुनिक फिल्मों में कृष्णभक्ति, रामकथा, संत परंपरा और लोकजीवन से जुड़े प्रसंगों में ब्रज तथा अवधी के शब्दों और वाक्य-विन्यास का प्रयोग किया जाता है।

“मोहे”, “तोहे”, “काहे”, “सखि”, “प्रभु”, “मनवा”, “पिया” और “अँखियन” जैसे शब्द मध्ययुगीन भावभूमि का निर्माण करते हैं। इनका प्रयोग विशेष रूप से गीतों और भावनात्मक संवादों में किया जाता है।

उर्दू, फारसी और अरबी का प्रभाव

मध्ययुगीन राजदरबारों, प्रशासनिक संस्थाओं और मुस्लिम शासक वर्ग से जुड़े प्रसंगों में उर्दू-फारसी शब्दावली का प्रयोग वातावरण को ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय बनाने के लिए किया जाता है। “हुजूर”, “दरबार”, “फरमान”, “सल्लनत”, “शहंशाह”, “इंसाफ”, “इबादत”, “मोहब्बत”, “वफादारी”, “गुलाम” और “रियासत” जैसे शब्द फिल्मी भाषा में बार-बार दिखाई देते हैं।

इन शब्दों का प्रयोग केवल भाषिक सजावट के लिए नहीं होता, बल्कि वे सत्ता, सामाजिक पदानुक्रम और सांस्कृतिक पहचान को भी व्यक्त करते हैं। राजदरबार की भाषा और सामान्य जनता की भाषा के बीच अंतर दिखाकर फिल्मों में मध्ययुगीन सामाजिक संरचना को रेखांकित करती हैं।

संस्कृतनिष्ठ शब्दावली: राजपूत, ब्राह्मण, संत, योद्धा और धार्मिक पात्रों से जुड़े प्रसंगों में संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग किया जाता है। “धर्म”, “मर्यादा”, “प्रतिज्ञा”, “वीरता”, “त्याग”, “राजधर्म”, “कर्तव्य” और “सम्मान” जैसे शब्द पात्रों के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को व्यक्त करते हैं।

हालाँकि फिल्मों में प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रायः आधुनिक दर्शकों की समझ के अनुरूप सरल बनाई जाती है। अत्यधिक कठिन शब्दावली से बचते हुए ऐसी भाषा का चयन किया जाता है, जो ऐतिहासिक वातावरण और संवाद की सहजता दोनों को बनाए रखे।

क्षेत्रीय बोलियों और लोकभाषाओं का प्रयोग

मध्ययुगीन परिवेश को जीवंत बनाने में क्षेत्रीय बोलियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। राजस्थानी, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, बुंदेली, हरियाणवी और पंजाबी भाषिक रूपों का प्रयोग पात्रों की भौगोलिक पहचान स्थापित करता है।

राजस्थान-आधारित फिल्मों में राजस्थानी संबोधन, लोकमुहावरे और उच्चारण शैली दिखाई देती है। इसी प्रकार उत्तर भारत के ग्रामीण या सामंती परिवेश में अवधी, ब्रज अथवा बुंदेली के शब्दों का प्रयोग कथा को स्थानीय रंग प्रदान करता है।

काव्यात्मक और अलंकारिक भाषा

मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों में प्रेम, भक्ति, युद्ध और त्याग से जुड़े प्रसंगों में काव्यात्मक भाषा का प्रयोग अधिक होता है। उपमा, रूपक, अनुप्रास, प्रतीक और भावात्मक संबोधनों के माध्यम से संवादों को प्रभावशाली बनाया जाता है।

गीतों में यह प्रवृत्ति और अधिक स्पष्ट दिखाई देती है। प्रेमगीतों में विरह, मिलन, प्रतीक्षा और समर्पण की भावनाएँ व्यक्त की जाती हैं, जबकि भक्ति-गीतों में आत्मसमर्पण, ईश्वर-प्रेम और आध्यात्मिक अनुभूति को प्रमुखता दी जाती है।

मध्ययुगीन सामाजिक परिवेश और फिल्मी भाषा

मध्ययुगीन परिवेश केवल वेशभूषा, स्थापत्य और युद्ध-दृश्यों से निर्मित नहीं होता; भाषा भी उसके निर्माण का प्रमुख साधन है। संवादों के माध्यम से सामाजिक संबंधों, सत्ता-संरचना और वर्गीय विभाजन को स्पष्ट किया जाता है।^{4.1} राजदरबार और सत्ता की भाषा

राजदरबार से जुड़े संवादों में औपचारिकता, सम्मानसूचक संबोधन और पदानुक्रम का विशेष ध्यान रखा जाता है। राजा या शासक के लिए “महाराज”, “महाराणा”, “बादशाह”, “शहंशाह” और “हुजूर” जैसे संबोधन प्रयुक्त होते हैं। दरबारी पात्रों की भाषा में विनम्रता, प्रशंसा और राजनीतिक सावधानी दिखाई देती है।

दरबार की भाषा सत्ता के केंद्रीकरण और सामाजिक दूरी को व्यक्त करती है। इसके विपरीत सामान्य जनता, सैनिकों और ग्रामीण पात्रों की भाषा अधिक सहज, लोकप्रचलित और भावनात्मक होती है।

युद्ध और वीरता की भाषा

मध्ययुगीन फिल्मों में युद्ध और वीरता से जुड़े संवादों में ओज, उत्साह और चुनौती का स्वर दिखाई देता है। “रणभूमि”, “शौर्य”, “बलिदान”, “मातृभूमि”, “प्रतिशोध” और “सम्मान” जैसे शब्द वीरतापूर्ण वातावरण का निर्माण करते हैं।

ऐसे संवादों में भाषा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि दर्शकों में भावनात्मक उत्तेजना और सामूहिक गौरव की भावना उत्पन्न करना भी होता है। कई बार युद्ध-संबंधी भाषा आधुनिक राष्ट्रवाद और समकालीन राजनीतिक भावनाओं से भी प्रभावित होती है।

स्त्री पात्रों की भाषा

मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों में स्त्री पात्रों की भाषा उनके सामाजिक स्थान, पारिवारिक भूमिका और व्यक्तिगत चेतना को व्यक्त करती है। राजमहल की स्त्रियों की भाषा में शिष्टता और औपचारिकता दिखाई जाती है, जबकि लोकजीवन से जुड़ी स्त्रियों की भाषा में क्षेत्रीयता और सहजता अधिक होती है।

समकालीन फिल्मों में स्त्री पात्रों को केवल त्याग और मर्यादा की प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उन्हें निर्णय लेने वाली, संघर्षशील और आत्मसम्मान से युक्त व्यक्तियों के रूप में भी चित्रित किया जा रहा है। इस परिवर्तन का प्रभाव उनके संवादों और भाषिक अभिव्यक्ति में स्पष्ट दिखाई देता है।

संत और सूफी परंपरा की भाषा

मध्ययुगीन भारत की संत और सूफी परंपराओं ने लोकभाषाओं को व्यापक अभिव्यक्ति दी। फिल्मों में संतों और सूफी पात्रों की भाषा प्रायः सरल, प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक होती है। इसमें प्रेम, मानवता, समानता, ईश्वर और आत्मज्ञान जैसे विषयों को प्रमुखता दी जाती है।

ऐसी भाषा सामाजिक विभाजन और धार्मिक कट्टरता के विरुद्ध मानवीय एकता का संदेश देती है। संत और सूफी संवादों में लोकप्रचलित मुहावरों, दोहों, पदों और सूक्तियों का प्रयोग वातावरण को अधिक प्रभावशाली बनाता है।

आधुनिक दृष्टि और मध्ययुगीन भाषा का पुनर्निर्माण

आधुनिक हिंदी फिल्मों में मध्ययुगीन भाषा का पुनर्निर्माण वर्तमान समय की दृष्टि से किया जाता है। फिल्मकार अतीत को ज्यों का त्यों प्रस्तुत नहीं कर सकते, क्योंकि दर्शकों की भाषा, संवेदना और सामाजिक अनुभव बदल चुके हैं। इसलिए ऐतिहासिक परिवेश को आधुनिक संप्रेषणीयता के साथ जोड़ा जाता है।

इस प्रक्रिया में तीन प्रमुख प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं—

ऐतिहासिकता का आभास – पुराने शब्दों, संबोधनों और मुहावरों का चयनात्मक प्रयोग।

आधुनिक संवाद-शैली – संवादों को वर्तमान दर्शकों के लिए सरल और प्रभावशाली बनाना।

नाटकीयता और भावनात्मक प्रभाव – भाषा में अतिशयोक्ति, काव्यात्मकता और वीरतापूर्ण स्वर का प्रयोग।

इस प्रकार फिल्मी भाषा इतिहास का पुनर्निर्माण करती है, लेकिन वह इतिहास की शाब्दिक पुनरावृत्ति नहीं होती। वह अतीत को वर्तमान की सांस्कृतिक आवश्यकताओं और लोकप्रिय कल्पना के अनुरूप प्रस्तुत करती है।

गीतों में मध्ययुगीन परिवेश

मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों में गीतों का विशेष महत्व है। गीतों के माध्यम से प्रेम, भक्ति, विरह, उत्सव, युद्ध और लोकजीवन को अभिव्यक्ति मिलती है। गीतों की भाषा में ब्रज, अवधी, राजस्थानी, उर्दू और संस्कृतनिष्ठ शब्दों का मिश्रण दिखाई देता है।

लोकगीतों और पारंपरिक संगीत-शैलियों का प्रयोग फिल्म के सांस्कृतिक वातावरण को विश्वसनीय बनाता है। विवाह, उत्सव, युद्ध-प्रस्थान, धार्मिक अनुष्ठान और ऋतु-परिवर्तन से जुड़े गीत मध्ययुगीन जीवन की सामूहिकता और सांस्कृतिक विविधता को सामने लाते हैं।

फिल्मी गीतों ने अनेक मध्ययुगीन शब्दों और लोकाभिव्यक्तियों को आधुनिक दर्शकों तक पहुँचाया है। इस प्रकार गीत भाषा और सांस्कृतिक स्मृति के संरक्षण का माध्यम भी बनते हैं।

फिल्मी भाषा और ऐतिहासिक प्रामाणिकता

मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों में ऐतिहासिक प्रामाणिकता एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। भाषा के स्तर पर यह चुनौती और अधिक जटिल हो जाती है, क्योंकि किसी एक कालखंड में भी विभिन्न वर्गों, क्षेत्रों और समुदायों की भाषाएँ अलग-अलग होती थीं।

फिल्मकार प्रायः ऐसी भाषा का चयन करते हैं, जो दर्शकों को ऐतिहासिक वातावरण का अनुभव कराए, लेकिन कथा को समझने में कठिनाई न हो। इस कारण संवादों में आधुनिक हिंदी के साथ ऐतिहासिक शब्दावली का मिश्रण किया जाता है।

कभी-कभी भाषा में ऐसे शब्द और अभिव्यक्तियाँ भी दिखाई देती हैं, जो ऐतिहासिक काल से मेल नहीं खातीं। यह अनैतिहासिकता फिल्म की लोकप्रियता या नाटकीय प्रभाव को बढ़ा सकती है, लेकिन गंभीर इतिहास-बोध के लिए यह समस्या उत्पन्न करती है। इसलिए ऐतिहासिक फिल्मों की भाषा का मूल्यांकन करते समय कलात्मक स्वतंत्रता और ऐतिहासिक प्रामाणिकता दोनों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

आधुनिक समाज पर मध्ययुगीन फिल्मी भाषा का प्रभाव

मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों की भाषा आधुनिक समाज में अतीत की एक विशेष छवि निर्मित करती है। दर्शक इन फिल्मों के माध्यम से मध्ययुगीन समाज, शासकों, योद्धाओं, संतों, प्रेमियों और धार्मिक समुदायों के बारे में अपनी धारणाएँ बनाते हैं।

फिल्मी भाषा के माध्यम से—

ऐतिहासिक पात्र लोकप्रिय सांस्कृतिक स्मृति का हिस्सा बनते हैं।

पुराने शब्द, संबोधन और मुहावरे पुनः प्रचलित होते हैं।

क्षेत्रीय भाषाओं और लोकभाषाओं को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलती है।

भक्ति, सूफी परंपरा और सांस्कृतिक सह-अस्तित्व की धारणाएँ व्यापक होती हैं।

कभी-कभी इतिहास का सरलीकरण, महिमामंडन या सांप्रदायिक पुनर्व्याख्या भी सामने आती है।

इसलिए मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों की भाषा केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि इतिहास-बोध और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाली शक्ति भी है।

सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव

मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों की भाषा के अनेक सकारात्मक प्रभाव हैं। यह भाषा भारतीय भाषिक और सांस्कृतिक विविधता को सामने लाती है। लोकभाषाओं, क्षेत्रीय बोलियों, संत-साहित्य और सूफी परंपरा को लोकप्रिय बनाने में फिल्मों का योगदान महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से नई पीढ़ी ऐतिहासिक शब्दावली और सांस्कृतिक परंपराओं से परिचित होती है।

इसके साथ कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखे जा सकते हैं। ऐतिहासिक भाषा का अत्यधिक नाटकीय या कृत्रिम प्रयोग अतीत की गलत छवि प्रस्तुत कर सकता है। किसी विशेष समुदाय, जाति या धार्मिक समूह को रूढ़ छवियों में बाँधने से सामाजिक पूर्वाग्रह बढ़ सकते हैं। इसी प्रकार इतिहास के जटिल सामाजिक संबंधों को केवल वीरता, संघर्ष या प्रेमकथा तक सीमित कर देना ऐतिहासिक समझ को संकुचित कर सकता है।

डिजिटल युग और मध्ययुगीन फिल्मी भाषा

डिजिटल मीडिया ने मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों की भाषा के प्रभाव को और अधिक व्यापक बना दिया है। फिल्मों के संवाद, गीत, दृश्य और पात्र सोशल मीडिया, वीडियो प्लेटफॉर्म, मीम और लघु वीडियो के माध्यम से तेजी से प्रसारित होते हैं।

आज किसी फिल्म का एक संवाद या गीत कुछ ही समय में व्यापक जनसमुदाय तक पहुँच सकता है। इससे मध्ययुगीन शब्दावली और भाषिक शैलियाँ नए संदर्भों में प्रयुक्त होने लगती हैं। डिजिटल माध्यमों ने ऐतिहासिक फिल्मों को केवल सिनेमाघरों तक सीमित न रखकर उन्हें निरंतर चर्चा, आलोचना और पुनर्व्याख्या का विषय बना दिया है।

निष्कर्ष

आधुनिक हिंदी फिल्मों की भाषा और मध्ययुगीन परिवेश का संबंध अत्यंत जटिल और बहुआयामी है। मध्ययुगीन परिवेश पर आधारित फिल्मों में हिंदी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, ब्रज, अवधी, राजस्थानी और अन्य लोकभाषिक तत्वों का समन्वय दिखाई देता है। यह भाषिक मिश्रण ऐतिहासिक वातावरण, सामाजिक पदानुक्रम, सांस्कृतिक विविधता और पात्रों की पहचान को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

फिल्मी भाषा इतिहास का यथार्थ पुनरुत्पादन नहीं करती, बल्कि अतीत का कलात्मक और लोकप्रिय पुनर्निर्माण करती है। इसमें ऐतिहासिकता, आधुनिक संप्रेषणीयता और नाटकीयता का संतुलन दिखाई देता है। मध्ययुगीन परिवेश की फिल्मों ने लोकभाषाओं, संत-सूफी परंपराओं, वीरगाथाओं और सांस्कृतिक स्मृतियों को व्यापक समाज तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हालाँकि ऐसी फिल्मों में ऐतिहासिक सरलीकरण, भाषिक कृत्रिमता और सांस्कृतिक रूढ़िबद्धता की संभावनाएँ भी रहती हैं। इसलिए आधुनिक हिंदी फिल्मों की भाषा का अध्ययन केवल मनोरंजन या संवाद-शैली के स्तर पर नहीं, बल्कि इतिहास, समाज, संस्कृति, राजनीति और सामूहिक स्मृति के संदर्भ में किया जाना चाहिए।

अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक हिंदी फिल्मों की भाषा मध्ययुगीन परिवेश को पुनर्जीवित करने के साथ-साथ वर्तमान समाज में अतीत की नई व्याख्याएँ भी निर्मित करती है। यह भाषा इतिहास और आधुनिकता के बीच संवाद स्थापित करने वाली एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक शक्ति है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. नामवर सिंह – भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. रामविलास शर्मा – भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. हजारीप्रसाद द्विवेदी – हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. बच्चन सिंह – आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल – हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
6. अमीर खुसरो, कबीर, सूरदास और तुलसीदास की रचनाओं से संबंधित आलोचनात्मक ग्रंथ।
7. गुलजार एवं नसरीन मुन्नी कबीर – हिंदी सिनेमा के विविध आयाम, संबंधित सिनेमा-अध्ययन सामग्री।
8. विजय मिश्र – बॉलीवुड सिनेमा, हिंदी सिनेमा संबंधी आलोचनात्मक अध्ययन।
9. भारतीय सिनेमा, इतिहास और संस्कृति से संबंधित विश्वविद्यालयीय शोध-पत्र एवं शोध-ग्रंथ।
10. हिंदी भाषा, मध्ययुगीन साहित्य और संचार माध्यमों से संबंधित शोध-पत्र एवं पत्रिकाएँ।

Cite the Article:

वर्मा, अक्षय रंजन, पवार, डॉ. मेघा आर.. (2026). आधुनिक हिंदी फिल्मों की भाषा एवं मध्ययुगीन परिवेश : एक अध्ययन. Shiksha Samvad: International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1), 335–340.

DOI: - <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.39>

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.